# परिशिष्ट 13

## [ रोमियों के नाम पत्र ]
## मसीह व्यवस्था का उद्देश्य और अन्त

रोमियों 10:4 – "हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त (Greek: telos) है।" यूनानी शब्द "टेलोस" का अर्थ "उद्देश्य" या "अन्त" हो सकता है। इसके अलावा, "व्यवस्था" शब्द सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रकाशन या परमेश्वर की व्यवस्था की अपेक्षा को दर्शाता है जिसका अनुवाद और विस्तृत व्याख्या यहूदी शिक्षकों द्वारा की गई। इस प्रकार, रोमियों 10:4 का दो तरह से अनुवाद किया जा सकता है और दोनों ही अनुवाद रोमियों अध्याय 10 के संदर्भ में संभव है। रोमियों 10:5 में पाया जाने वाला अनुवाद : "मसीह व्यवस्था का अन्त" सबसे उत्तम है।

## क. (एक संभावित अनुवाद): परमेश्वर द्वारा परिभाषित मसीह व्यवस्था का उद्देश्य (अर्थ, सार और पूर्ति) है।

रोमियों 10:4 का पहला संभावित अनुवाद : "हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था (पुराने नियम के प्रकाशन के रूप में) का उद्देश्य (अर्थ और सार) है।" यूनानी शब्द "टेलोस" का अर्थ "उद्देश्य" है और "व्यवस्था" शब्द पुराने नियम के प्रकाशन को दर्शाता है, जिसमें नैतिक, औपचारिक और आम लोगों के लिए बनाई व्यवस्था शामिल हैं। रोमियों 10:4 को इस प्रकार समझा जा सकता है : यीशु मसीह पुराने नियम के पवित्रशास्त्र का उद्देश्य (लक्ष्य की पूर्ति) है, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे उसे धार्मिकता (उद्धार) प्राप्त हो।

### 1. यीशु मसीह ने परमेश्वर द्वारा उजागर और परिभाषित व्यवस्था को पूरा किया।

मत्ती 5:17 में, यीशु मसीह ने स्वयं यह कहा कि वह व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षाओं को लोप करने के लिए नहीं आया, बल्कि उन्हें पूरा करने के लिए आया था।

यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन की बातों से टकराने वाले प्रचारक नहीं थे। बल्कि उन्होंने यह सिखाया कि पुराने नियम का प्रकाशन (व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता) उसके आगमन की तैयारी के लिए था और जिसका पूरा होना अभी बाकि है। यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया था!

पौलुस इस बात को साबित करता है कि नये नियम में पाया जाने वाला विश्वास द्वारा न्याय का प्रकाशन पुराने नियम के प्रकाशन का विरोध नहीं करता है। इसके अलावा, पुराने नियम का प्रकाशन व्यवस्था के कर्मों से नहीं, बल्कि उद्धार पाने के मार्ग के रूप में विश्वास करने की शिक्षा देता है (रोमियों 3:21; 4:7–8; 9:11–12; 10:9–13; 11:20,23; गलातियों 3:6–22 से तुलना करें)। इस प्रकार, पुराने नियम के समय के दौरान "सुसमाचार" का प्रचार पहले ही किया जा चुका था (रोमियों 3:21–22; गलातियों 3:6–8; इब्रानियों 4:2)!

बेबीलोन (538 ईसा पूर्व) से लौटने के बाद, यहूदी धार्मिक शिक्षकों ने पुराने नियम की व्यवस्था को धार्मिकता प्राप्त करने का साधन माना और व्यवस्था के कर्मों के द्वारा न्याय करना सिखाया। इसके बाद न्याय (उद्धार) केवल उन लोगों के लिए संभव था जिन्होंने व्यवस्था को बनाए रखा हो!

यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन के मूल उद्देश्य को पूरा करने, अर्थात्, विश्वास द्वारा न्याय, और वास्तव

में पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया, ताकि विश्वास द्वारा न्याय उस पर विश्वास करने वालों के लिए एक वास्तविकता बन जाए।

यीशु मसीह ने कहा कि उसने पुराने नियम में पाए जाने वाले प्रकाशन (व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं) को (मत्ती 5:17; इफिसियों 2:15; कुलुस्सियों 2:14) दिए गए अर्थ के रूप में पूरा किया : "यीशु मसीह पुराने नियम की पुस्तकों में इंगित छाया (प्रकार) की पूर्ण वास्तविकता (कुलुस्सियों 2:17 इब्रानियों 10:1) और भविष्यद्वाणियों की पुस्तक की भविष्यद्वाणी है (लूका 18:31; 24:25-27,44)"।

पुराने नियम की व्यवस्था का उद्देश्य और इरादा यीशु मसीह के पहले आगमन व भविष्यद्वक्ता, महायाजक और राजा के रूप में उसके उद्धार के कार्य की ओर इशारा था, ताकि लोगों को उसके आगमन के लिए तैयार किया जा सके। लोगों को इस प्रकार तैयार किया गया ताकि वे नये जीवन में विश्वास के द्वारा परमेश्वर से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखें और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखें (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18; मत्ती 22:37-39)। यीशु मसीह स्वयं ही मूलरूप से सम्पूर्ण पुराने नियम के प्रकाशन का अर्थ और सार है। केवल यीशु मसीह ने ही पुराने नियम के प्रकाशन के हर अंश के भाग को बख़ूबी पूरा किया है!

(1) **केवल यीशु मसीह ने ही परमेश्वर की व्यवस्था की धार्मिक अपेक्षाओं को पूरा किया।**

अपने जीवन, मृत्यु, और पुनरुत्थान के द्वारा यीशु मसीह ने परमेश्वर की अपेक्षाओं को पूरा किया कि लोग परमेश्वर के समक्ष एक पूर्ण पवित्र और धर्मी राष्ट्र बने रहे, और पृथ्वी पर रहने वाली परमेश्वर की सन्तानें एक पूर्ण पवित्र और धर्मी जीवन व्यतीत करें और उनके सभी पापों का पूरी तरह से न्याय और दण्ड दिया जाए (कि पापों का पूर्ण प्रायश्चित किया गया)। केवल यीशु मसीह ने परमेश्वर की आवश्यक धार्मिकता (स्थिति के सम्बन्ध में), पवित्रता (जीवन के सम्बन्ध में), और उस पर विश्वास करने वाले लोगों के लिए छुटकारे को प्राप्त किया (1 कुरिन्थियों 1:30)। केवल वही उन्हें उद्धार का आश्वासन देता है (इब्रानियों 5:8-9)।

(2) **केवल यीशु मसीह ने ही नैतिक व्यवस्था को पूरा किया।**

उसने नैतिक व्यवस्था : दस आज्ञाओं के अर्थ की सही व्याख्या की और उसके अनुसार जीवन व्यतीत किया (मत्ती 5:17-48; मरकुस 12:28-31)।

(3) **केवल यीशु मसीह ने ही औपचारिक व्यवस्था को पूरा किया।**

औपचारिक व्यवस्था में मानव शरीर (Greek: dikaiomata sarkos) (पृथक, स्वच्छ भोजन) से सम्बन्धित सभी नियम शामिल थे जो नई आज्ञा (Greek: kairos diorthósis) के आने के समय तक निर्धारित किए गए थे (इब्रानियों 9:10)। इसमें पवित्र लोगों (याजकों), पवित्र स्थानों (मन्दिर), पवित्र समय (सब्त, पर्वों और उपवासों) और पवित्र कार्यों (खतना, स्नान, स्वच्छ भोजन, पशु-बलि, पहिलौठे, फसल की पहली उपज और दशमांश) से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ शामिल थीं।

इन सभी पुराने नियम के प्रकारों या छायाओं ने नई आज्ञा की ओर इशारा किया, अर्थात्, यीशु मसीह की वास्तविकता और नए नियम के समय के दौरान उसके उद्धार का कार्य (कुलुस्सियों 2:17; इब्रानियों 8:5; 9:10; 10:1)।

- क्रूस पर अपनी मृत्यु द्वारा उसने "निर्दोष मेम्ने" के रूप को पूरा किया जो पापों के लिए प्रायश्चित के बलिदान के रूप में दिया गया था (निर्गमन 12:4-5; यशायाह 53:7; यूहन्ना 1:29; रोमियों 3:25; इब्रानियों 7:26-27)। इस प्रकार उसने सभी बलिदानों (जानवरों) की आवश्यकता को समाप्त कर दिया (इब्रानियों 10:8-10)।

- अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा यीशु मसीह ने मन्दिर निर्माण के पुराने नियम के रूप को पूरा किया : उसने इसे दो टुकड़ों में फ़ाड़ दिया (मत्ती 27:51) और इसे नए नियम के मसीह की देह से बदल दिया (यूहन्ना 2:19-21)।
- मृतकों में से जी उठने के द्वारा उसने याजक के पद को बदल दिया (इब्रानियों 7:12) और केवल वही एकमात्र अविनाशी, स्थायी और पूरी तरह से पवित्र महायाजक है (इब्रानियों 7:16-28)।
- अपने आत्मा के द्वारा हृदय के आत्मिक ख़तने से उसने शरीर के शारीरिक ख़तने को समाप्त कर दिया (रोमियों 2:28-29; कुलुस्सियों 2:11-12)।

जब पुराने नियम के समय के दौरान इस्राएलियों ने औपचारिक व्यवस्था (छाया) को स्वीकार करके उसका पालन किया, तब उन्होंने यीशु मसीह (वास्तविकता) को स्वीकार किया और उसका पालन किया! यीशु मसीह "व्यवस्था के अधीन पैदा हुआ" (इस प्रकार व्यवस्था के अनुसार) (गलातियों 4:4)। वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसने व्यवस्था का पूरी तरह से पालन किया, क्योंकि उसने छाया (औपचारिक व्यवस्था) और भविष्यद्वाणियों को पूरा किया और व्यवस्था के अनुसार ही अपने जीवन को व्यतीत किया।

और जब यीशु मसीह ने व्यवस्था को *पूरा किया* (मत्ती 5:17), तब उसने इसे समाप्त कर दिया (कुलुस्सियों 2:14) और इसे मिटा दिया (इफिसियों 2:15)। यीशु मसीह के पहले आगमन के बाद, औपचारिक व्यवस्थाओं को कलीसियाओं में फिर से लागू नहीं किया गया! पुराने नियम की औपचारिक व्यवस्था ने यीशु मसीह की वास्तविकता की ओर इशारा किया, और इस वास्तविकता को नए नियम में प्रतिस्थापित नहीं किया जा सकता! कोई भी धर्म जो परमेश्वर द्वारा धार्मिकता प्राप्त करने के साधन के रूप में व्यवस्था को बनाए रखता है, उसे श्रापित किया गया (गलातियों 3:10-14; की तुलना 1:6-9 गलातियों करें)!

(4) **केवल यीशु मसीह ने ही लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था को पूरा किया।**

इस्राएल राज्य के लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्थाओं में राजाओं, संपत्ति, विवाह, यौनाचार, युद्ध, युद्ध के बन्दियों, कर इत्यादि से सम्बन्धित व्यवस्थाएँ शामिल थीं।

केवल यीशु मसीह ने ही संसार के सभी राष्ट्रों में (मत्ती 24:14) परमेश्वर के राज्य की संस्कृति के साथ मिलकर (मत्ती अध्याय 5 से 7, 13, 18, और 23 से 25) परमेश्वर के राज्य की स्थापना करके (मत्ती 4:17; 12:28-30) लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था को *पूर्ण और समाप्त कर दिया।*

**निष्कर्ष।** इस्राएल राष्ट्र और व्यवस्थाएँ केवल परमेश्वर के प्रकाशन के माध्यम थे, न कि परमेश्वर के प्रकाशन के अन्तिम उद्देश्य। "उद्धार यहूदियों में से है" (यूहन्ना 4:22) का अर्थ है कि इस्राएल राष्ट्र का उद्देश्य उद्धारकर्ता को सामने लाना था (यशायाह 49:3; रोमियों 1:16; 3:2; 9:4-5; 15:8-9; प्रेरितों के काम 13:23,39)। आरम्भ से, परमेश्वर का उद्देश्य था कि उसके प्रकाशन के द्वारा (अर्थात् इस्राएल राष्ट्र) उसके प्रकाशन (अर्थात्, यीशु मसीह) के उद्देश्य के लिए जगह तैयार करेंगे (उत्पत्ति 3;15; 22:17-18 से तुलना करें)!

मसीह के आगमन से पहले, परमेश्वर ऐसे रहता था जैसे कि वह अपने लोग इस्राएल के बीच यरूशलेम के मन्दिर में रहता हो (यूहन्ना 2:19-21 से तुलना करें)। मसीह के पहले आगमन के बाद, परमेश्वर के लोगों के रूप में इस्राएल और इस्राएल के लिए औपचारिक और लोगों के लिए बनाई गई व्यवस्था अपने अन्तिम लक्ष्य तक पहुँच गई। नए नियम में यह "रहस्य" (कि परमेश्वर अब इस्राएलियों के बीच एक मन्दिर की इमारत में नहीं रहता है, लेकिन) कि यीशु मसीह संसार के सभी देशों के मसीहियों में रहने आया (कुलुस्सियों 1:27), सामने आया। ये मसीही लोग इस्राएल और अन्यजातियों के राष्ट्रों से आये और *पूरी तरह से एक साथ मिलकर* उन्होंने यीशु मसीह के द्वारा, जो पवित्र आत्मा के द्वारा उनमें रहने आया था, "परमेश्वर के लोगों" (इफिसियों

3:2-6) का गठन किया!

## 2. <u>यीशु मसीह ने भविष्यद्वाणियों को पूरा किया।</u>

पुराने नियम में पाई जाने वाली सभी भविष्यवाणियाँ, जो उसके आगमन, क्रूस की मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण, मसीहा (मसीह) के सिंहासन पर जा बैठने और महान भविष्यद्वक्ता, महायाजक, और सबसे सामर्थी और अनन्त राजा के रूप में मसीहा (मसीह) के कार्य से सम्बन्धित थीं, वे सभी नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा एक वास्तविकता बन गई।

- पुराने नियम के समय के दौरान, लोगों का केवल *आने वाले मसीहा* (मसीह) में विश्वास द्वारा न्याय किया गया था (उत्पत्ति 12:3; 15:6; 22:18; गलातियों 3:16)।
- लेकिन नए नियम के समय के दौरान लोगों का *मसीह में, जो पहले ही आ चुका है,* विश्वास करने के द्वारा न्याय होता है (रोमियों 3:28)।

### (1) **यीशु मसीह सबसे महान भविष्यद्वक्ता है।**

यीशु मसीह के आत्मा के द्वारा ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं (1 पतरस 1:10-12; 2 पतरस 1:20-21; 2 तीमुथियुस 3:16 से तुलना करें) ने भविष्यद्वाणी और प्रचार किया! यीशु मसीह ने ही नए नियम के इतिहास में इन भविष्यद्वाणियों को पूरा किया (मत्ती 5:17)! उदाहरण के लिए, मसीह ने "परमेश्वर हमारे साथ है" (यशायाह 7:14; मत्ती 1:23), कि उसने बेतलहम में अपने जन्म के द्वारा मानव स्वभाव को ग्रहण किया (मीका 5:2; लूका 2:1-7), जिसे क्रूस पर चढ़ाया गया (भजन 22:1,16,18; लूका 23:33), जो मृतकों में से पुनर्जीवित हुआ (भजन 16:10-11; लूका 24:1-6) और वह स्वर्ग पर चढ़ गया और उसके सिंहासन पर जा बैठा (भजन 110:1,4; प्रकाशितवाक्य 5:1-13), जैसी भविष्यद्वाणियों को पूरा किया। <u>यीशु मसीह इतिहास का एकमात्र भविष्यद्वक्ता है जिसने सभी भविष्यवाणियों को पूरा किया</u>। इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान भविष्यद्वक्ता के रूप में प्रगट किया जो सर्वदा के लिए जीवित है (व्यवस्थाविवरण 18:15,18-19; प्रेरितों के काम 3:22-23)।

यीशु मसीह ने मनुष्यों से परमेश्वर के अन्तिम दिनों की बातें कही (इब्रानियों 1:1-2)। "उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों (पुराने और नये नियम के समय की अवधि के विश्वासी) को एक (Greek: hapax) ही बार सौंपा (Greek: paradidómi) (अनिश्चित काल) गया था" (यहूदा 3)। मसीही विश्वास केवल एक बार ही मानव इतिहास में विश्वासियों को सौंपा गया था। <u>प्रत्येक तथाकथित "भविष्यद्वक्ता" जो यीशु मसीह के बाद आये और जिन्होंने पुराने और नए नियम की बातों को बढ़ाया या घटाया है या उसे बदला, वे सभी झूठे भविष्यद्वक्ता हैं</u> (व्यवस्थाविवरण 18:15-22; नीतिवचन 30:6; मत्ती 15:3-14; 2 कुरिन्थियों 4:2; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। यदि कोई भी भविष्यद्वक्ता जो बाइबल में दी गई प्रकाशन की बातों के विपरीत भविष्यवाणियाँ करता है, तो वह परमेश्वर के वचन में बातों को जोड़ने का दोषी है और उसे अस्वीकार कर देना चाहिए!

### (2) **यीशु मसीह महायाजक है।**

यीशु मसीह ने पुराने नियम की व्यवस्था की सभी आवश्यकताओं या अपेक्षाओं को पूरा किया। अपने मानव स्वभाव में, उसने पृथ्वी पर पूरी तरह से पवित्र और धार्मिक जीवन व्यतीत किया (यूहन्ना 8:46; इब्रानियों 4:15; 7:24-28) और इस प्रकार उसने केवल परमेश्वर के नैतिक व्यवस्थाओं की आवश्यकताओं को पूरा किया। उसने एक खरा जीवन व्यतीत किया, दूसरों की चरवाही की (भजन 78:72), लोगों से प्रेम किया और उनके लिए प्रार्थना की (यशायाह 53:12), वह अच्छा करता फिरा और शैतान के सताए हुओं को चंगा किया (प्रेरितों के काम 10:38)। अन्ततः, वह लोगों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में क्रूस पर मर गया

(यशायाह 53:5-6; भजन 40:6-8; यूहन्ना 10:11; इब्रानियों 10:5-7)। मानव इतिहास में यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा याजक था जिसने स्वयं को पापों के पूर्ण (पाप रहित) बलिदान के रूप में दे दिया। वही एकमात्र ऐसा याजक है जिसने स्वयं को दूसरों के पापों के प्रायश्चित के बलिदान (पापरहित) के रूप में दे दिया। वही एकमात्र ऐसा है जिसे मृतकों से पुनर्जीवित किया गया (अन्य सभी भविष्यद्वक्ता और याजक और धर्मगुरू अपनी कब्रों में मृत पड़े हैं); वह हमेशा के लिए जीवित है और इस प्रकार उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं है।[1] यीशु मसीह के बाद, कोई भी ऐसा "भविष्यद्वक्ता" नहीं हैं, जो लोगों के लिए परमेश्वर के विचारों को व्यक्त करनेवाला हो (प्रेरितों के काम 3:22-23; इब्रानियों 1:1) और न ही ऐसा कोई याजक (इब्रानियों 7:23-28) है जो परमेश्वर और लोगों के बीच "मध्यस्त" के रूप में कार्य करे! इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान महायाजक के रूप में प्रगट किया जो हमेशा के लिए जीवित है (भजन 110:4; जकर्याह 6:13)।

(3) **यीशु मसीह सामर्थी और अनन्त का राजा है।**

यीशु मसीह ने आने वाले राजा (उत्पत्ति 49:10) की भविष्यद्वाणी को पूरा किया, जो अपने शाही शासन द्वारा अपने लोगों को उनके शत्रुओं के हाथों से छुड़ाएगा और उन पर हमेशा के लिए शासन करेगा (1 इतिहास 17:14; यशायाह 9:7; प्रकाशितवाक्य 1:5; 19:16)। उसे स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है (मत्ती 28:18)! उसने एक ऐसे राज्य की स्थापना की जो कभी भी हिलने की नहीं (इब्रानियों 12:28), जो अन्ततः संसार के अन्य सभी राज्यों को कुचल देगा (दानिय्येल 2:44; प्रकाशितवाक्य 17:14), और जो सर्वदा बना रहेगा (यशायाह 9:7)! इसलिए संसार के अन्य सभी राजनीतिक, सैन्य और धार्मिक शासकों को सचेत रहना चाहिए (भजन 2)! इस तरह, यीशु मसीह ने स्वयं को सबसे महान राजा के रूप में प्रगट किया जो हमेशा के लिए जीवित है।

(4) **पुराने नियम का किस प्रकार अनुवाद किया जाना चाहिए।**

क्योंकि यीशु मसीह पुराने नियम के प्रकाशन को पूरा करने के लिए आया, पुराने नियम को केवल नए नियम के प्रकाशन के दृष्टिकोण से ही सही ढंग से समझा जा सकता है!

## A. (सबसे अच्छा अनुवाद) : धार्मिक लोगों द्वारा परिभाषित व्यवस्था का मसीह का अन्त (समाप्ति) है।

### 1. यीशु मसीह ने धार्मिक लोगों द्वारा बनाई और समझाए गई व्यवस्था को समाप्त कर दिया।

दूसरा संभावित अनुवाद : "हर एक विश्वास करनेवाले के लिए धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त (समाप्ति) (धार्मिक शिक्षकों के लिए परमेश्वर की व्यवस्था की अपेक्षा के संदर्भ में जिसकी विस्तृत व्याख्या और अनुवाद यहूदी शिक्षकों द्वारा किया गया) है।" "टेलोस" शब्द का अर्थ "अन्त" है और "व्यवस्था" शब्द न्याय के लिए परमेश्वर की व्यवस्था और धार्मिक अपेक्षा को दर्शाता है विशेषकर मूसा की व्यवस्था के सन्दर्भ में, जिसका अनुवाद और विस्तृत व्याख्या यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों द्वारा की गई। रोमियों 10:4 को इस प्रकार से समझा जा सकता है। "यीशु मसीह न्याय के लिए व्यवस्था का अन्त (समाप्ति) है, ताकि हर एक विश्वास करने वाले के लिए यह धार्मिकता (उद्धार) ठहरे।"

यहूदी धर्मगुरु और शिक्षकों ने व्यवस्था को न्याय (उद्धार) का एकमात्र मार्ग बताया। उदाहरण के लिए देखें कि यहूदी "खतने" के बारे में क्या सिखाते हैं (प्रेरितों के काम 15:1)। यीशु मसीह ने यहूदियों की गलत धारणा को समाप्त कर दिया कि एक व्यक्ति को व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा उचित ठहराया जा सकता है।

---

[1]जो लोग यीशु मसीह के उत्तराधिकारी होने का दावा करते हैं, वे हैं Mohammed (569-632 A.D.) ("Mohammed, the man and his faith", Tor Andrae, 1960) and Joseph Smith (1805-1844) ("Understanding the Cults", Josh McDowell, Dan Stewart).। दोनों दावे झूठे हैं!

मसीही व्यवस्था द्वारा धार्मिकता का अन्त या समाप्ति है, ताकि विश्वास (मसीह में और उसके उद्धार के पूर्ण कार्य के द्वारा) के द्वारा धार्मिकता प्राप्त की जा सके। पौलुस उद्धार की तैयारी के रूप में पुराने नियम के प्रकाशन के उद्देश्य या पूर्ति की बात नहीं कर रहा है, लेकिन वह इस झूठे यहूदी विश्वास, कि व्यवस्था को बनाए रखने के द्वारा धार्मिकता प्राप्त की जा सकती है, के अंत या समाप्ति की बात कर रहा है (जैसा कि यहूदियों ने व्यवस्था की व्याख्या की थी)।

मूसा ने परमेश्वर के व्यवस्था की आवश्यकता का वर्णन इस प्रकार किया, "जो व्यक्ति व्यवस्था (पुराने नियम के प्रकाशन की व्यवस्था और नियम) का पालन करता है, वह उनसे जीवित (अर्थात् : अपनी धार्मिक स्थिति या अनन्त जीवन बनाए रखने के द्वारा) रहेगा" (रोमियों 10:5; लैव्यव्यवस्था 18:5)। केवल आदम और हव्वा के पास पाप में गिरने से पहले धार्मिकता या अनन्त जीवन की अपनी स्थिति बनाए रखने की संभावना थी (उत्पत्ति 2:15-17)! पाप में गिरने के बाद, कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है, क्योंकि किसी के पास ऐसी धार्मिक स्थिति नहीं है! किसी व्यक्ति के न्याय के लिए मसीह में विश्वास और उसके स्थान पर यीशु की पूर्ण और सिद्ध धार्मिकता आवश्यक थी और है (उत्पत्ति 15:6; 1 कुरिन्थियों 1:30; 2 कुरिन्थियों 5:21)!

हालाँकि, यहूदी धर्मगुरुओं ने बेबीलोन से लौटने से लेकर (538 ईसा पूर्व) यीशु तक परमेश्वर की व्यवस्था को धर्म में बदल दिया और लैव्यव्यवस्था 18:5 में लिखे शब्दों "उनके कारण जीवित रहेंगे" की व्याख्या "उनके कारण उनका न्याय (बचाये जाएँगे) होगा" के रूप में की।

इसके फलस्वरूप, उन्होंने पुराने नियम की व्यवस्था को स्वनिर्मित सेकड़ों व्याख्याओं और नियमों के नीचे दबाना आरम्भ कर दिया।[2] उन्होंने "विश्वास के द्वारा धार्मिकता (उद्धार) (जो परमेश्वर ने कहा और किया)" को "व्यवस्था द्वारा (जो लोग कहते और करते हैं) धार्मिकता (उद्धार) में बदल दिया।" यह यीशु मसीह नहीं था, लेकिन ये यहूदी धार्मिक शिक्षक थे, जिन्होंने पुराने नियम को एक ओर रखकर, अपनी स्व-निर्मित व्यवस्थाओं से बदल दिया (मरकुस 7:1-13)!

## 2. पुराने नियम के शिक्षण और यहूदी दृष्टिकोण में अन्तर।

यह पुराना नियम नहीं था, लेकिन बेबीलोन के निर्वासन और यीशु मसीह के पहले आगमन (586 - 0 ईसा पूर्व) के बीच में यहूदी धार्मिक शिक्षक थे जिन्होंने यह सिखाया कि लोगों का व्यवस्था के कार्यों द्वारा न्याय (बचाया) किया जा सकता है। यहूदियों ने व्यवस्था के साथ परमेश्वर के उद्देश्य को स्पष्ट रूप से गलत समझा और उसकी गलत व्याख्या की।

पुराने और नये नियम दोनों में ही इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि पुराने नियम के समय के दौरान व्यवस्था को न्याय के आधार के रूप में प्रस्तुत किया गया था। और इस बात का भी कोई प्रमाण नहीं है कि पुराने नियम (यानी व्यवस्था को बनाए रखने) में न्याय के कथित आधार को नये नियम में मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य में विश्वास द्वारा प्रतिस्थापित किया गया!

पुराने नियम में कहीं भी यह नहीं सिखाया गया कि मूसा की व्यवस्था परमेश्वर की दृष्टि में धार्मिकता प्राप्त करने का साधन थी! पौलुस की पुराने नियम और विशेष रूप से मूसा की व्यवस्था के सिद्धान्त के पक्ष में विश्वास में होकर अनुग्रह के द्वारा न्याय की बार-बार की गई विनती यहूदी दृष्टिकोण को अस्थिर बनाती है (उदाहरण के लिए रोमियों 3:21-22; 4:6-8,13; 9:15-16; 10:6-8; 15:8-9; और गलातियों 3:10-11,17-22; 4:21-31 पदों को देखें)! पौलुस निश्चित रूप से पुराने नियम के समय के दौरान द्वारा उद्धार के मार्ग को नए नियम में सुसमाचार के द्वारा प्रतिस्थापित करने के विषय में नहीं कह रहा है।

[2] 613 मानव-निर्मित व्यवस्थाएँ : 248एँ और 365 निषेधाज्ञाएँ

पौलुस पुराने और नए नियम की विश्वास के द्वारा न्याय की सच्ची शिक्षा और झूठे यहूदी शिक्षकों की व्यवस्था को जो व्यवस्था के अनुसार किये गए कर्मों के न्याय के विषय में बताती है के बीच के अन्तर को बताता है! निर्वासन से लेकर यीशु के समय तक यहूदी धार्मिक अगुवों और शिक्षकों ने सिखाया कि व्यवस्था (नैतिक, औपचारिक और लोगों के लिए बनायीं गयी व्यवस्था के अर्थ में) को बनाए रखना ही उद्धार पाने का मार्ग है। लेकिन सम्पूर्ण पुराने और नए नियम का प्रकाशन सिखाता है कि यीशु मसीह (मसीहा) में विश्वास रखना ही उद्धार का एकमात्र मार्ग है! पौलुस व्यवस्था (व्यवस्था के कार्यों के द्वारा धार्मिकता को प्राप्त करना) के झूठे यहूदी और विश्वास के सच्चे बाइबल सिद्धान्त के बीच के अन्तर को बताता है। यीशु मसीह के उद्धार के पूर्ण कार्य में विश्वास करने के द्वारा परमेश्वर की धार्मिकता को प्राप्त किया जा सकता है।

इसलिए रोमियों 10:4 की यह दूसरी व्याख्या शायद वही है जो पौलुस कहना चाहता था। पौलुस यह कहता है कि यीशु मसीह ने व्यवस्था की रीति या दृष्टिकोण का *अन्त कर दिया।* उसने इस व्यापक प्रचार की धारणा का अन्त कर दिया कि धार्मिकता मूसा की व्यवस्था (विशेष रूप से जिसकी व्याख्या यहूदी धार्मिक शिक्षकों और अगुवों द्वारा की गई) को ध्यान में रखते हुए अर्जित की जानी चाहिए! पौलुस ने स्पष्ट रूप से यह स्थापित करने के लिए ऐसा किया कि धार्मिकता (उद्धार) को :

- केवल यीशु मसीह के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है
- केवल यीशु मसीह के अनुग्रह के द्वारा ही प्राप्त (अध्यारोपित और दिया जा सकता है) किया जा सकता है।
- केवल यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा ही प्राप्त (और कार्यान्वित) किया जा सकता है।